International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 27-04-2022, Accepted: 13-05-2022, Published: 28-05-2022
Volume 8, Issue 3, 2022, Page No. 54-57

नई विश्व व्यवस्था और रूस–यूक्रेन विवाद के विभिन्न पहल

धर्मेन्द्र चौधरी
सहायक आचार्य, हरि दयालु कौशल महाविद्यालय, बाड़मेर, राजस्थान, भारत

सारांश
विश्व में अमेरिकी प्रभुत्व के दबदबे के स्थित होने के साथ ही विश्व व्यवस्था एकधुवीय विश्व से बहुधुवीय विश्व व्यवस्था की और परिवर्तित हो रही है। वर्तमान समय में रूस व युक्रेन विवाद के चलते पूरा विश्व दो गुटों मे बँट गया है। जहाँ एक तरफ NATO समर्थित देश है जो कि अमेरिका के नेतृत्व में है, वही दुसरी तरफ रूस के नेतृत्व में सभी साम्यवादी देशों का जमावड़ा है। विश्व व्यवस्था मे इस प्रकार दो प्रभुत्वशाली राष्ट्रों के नेतृत्व में विश्व दो भागों में बँट गया है। जहाँ एक तरफ पूँजीवादी देश हैं वहीं दूसरी तरफ साम्यवादी देश। इस प्रकार युक्रेन विवाद के बढने से स्थिति इतनी गंभीर है या हो गई है कि नाटो (NATO) देशों व रूसी सेना के बीच कभी भी युद्ध की स्थिति बन सकती है।
नाटो देश से सम्बन्धित इस पूरे विवाद में एक नए युद्ध की संभावना व विनाश की स्थिति को जन्म दिया है। रूस व युक्रेन विवाद के कारण उत्पन्न हुई इस परिस्थिति का मुख्य जिम्मेदार नाटो के नेतृत्वकारी राष्ट्र अमेरिका को कहा जा सकता है, क्योंकि युक्रेन का साथ अमेरिका के द्वारा हर स्थिति में दिया जा रहा है। जिससे की अमेरिका रूस की शक्ति को इस विश्व व्यवस्था मे फिर से धुमिल कर सके व अपनी हेजेमनी व सुपर पॉवर वाली छवि को फिर से विश्व व्यवस्था में कायम कर सके।
इन सभी कारणो से रूस व युक्रेन विवाद इतनी भयानक परिस्थिति में पहुँच गया है कि यूरोप भी इस आग से नही बच सकता है। हम सभी जानते है कि यूरोप और अधिकतर विश्व रूस से गैस के आयात पर पूरी तरह से निर्भर है। भारत भी इस समीकरण से अछुता नहीं है रूस पर नाटो द्वारा प्रतिबंध से भारत अपने गैस के आयात पर सऊदी अरब पर निर्भर हो जाएगा और ये समीकरण इस कदर उलझे हुए है कि सम्पुर्ण विश्व को गैस सकंट के सामने लाकर खड़ा कर सकता है, जो कि किसी अनहोनी से कम नही है।

मूल शब्दः विश्व व्यवस्था, रूस–यूक्रेन विवाद, प्राधान्यता की स्थिति, शांति और युद्ध

प्रस्तावना

रूस–युक्रेन की ऐतिहासिक पृष्ठभुमि

रूस व युक्रेन विवाद आज जहाँ विश्व भर मे इतना उभर कर सामने आया है वही यदि इनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की बात करे तो रूस व युक्रेन का सम्बन्ध अत्यंत पुराना रहा है। हम सभी जानते है कि रूस 1991 मे अपने विघटन से पहले सोवियत संघ के नाम से जाना जाता था। यदि हम वर्ष 1917 की सोवियत संघ में हुई लाल क्रांति की बात करे तो उस समय हुई रूसी क्रांति के पश्चात् युक्रेन सन् 1918 में पूर्ण तरीके से आजाद हुआ। इस समय वह एक स्वतंत्र देश था। लेकिन अगले 3 वर्ष बाद ही युक्रेन को सोवियत सघं मे सम्मिलित कर लिया गया। जहाँ तक युक्रेन की स्वतत्रंता की बात की जाए युक्रेन के देशवासी सदैव से ही अपनी एक स्वतंत्र पहचान की भूमिका को बनाए रखना चाहते है। जब 1991 मे सोवियत सघं का विघटन हुआ और सोवियत संघ के 15 टुकेड हुए उनमे युक्रेन भी एक देश था। युक्रेन व रूस हमेशा से ही विश्व भर मे सामाजिक व आर्थिक दुष्टि से महत्वपूर्ण रहे है। युक्रेन क्षेत्रफल व अर्थव्यवस्था के मामले में रूस के बाद सबसे बड़ा देश रहा है। वही रूस व युक्रेन विश्वभर का 30 प्रतिशत गेहूँ का उत्पादन करते है। रूस की तुलना मे युक्रेन की स्थिति इतनी मजबूत नहीं है परन्तु युक्रेन फिर भी रूस का सामना कर आज NATO संगठन से जुड़ना चाहता। क्योंकि युक्रेन कही ना कहीं इसी बात से भयभीत है कि कहीं क्रीमिया विवाद की तरह युक्रेन भी फिर से रूस के हाथों अपनी स्वतंत्रता ना खो दे और रूस उसे भी ना हथिया लें।

रूस–क्रीमिया विवाद 2014

क्रीमिया युक्रेन का ही एक हिस्सा हुआ करता था। जब युक्रेन ने उस समय NATO संगठन के सदस्य होने की इच्छा जताई तो रूस ने इस बात से नाराजगी जताई की उसका पड़ोसी देश यदि NATO से संगठित हुआ तो यह उसकी सामरिक व राजनितिक स्थिति को प्रभावित करेगा। जो कि रूस कभी नहीं चाहता था। इस प्रकार रूस ने कई प्रकार से युक्रेन पर दबाव बनाया। जिससे उसके समय के युक्रेन के तत्कालिन राष्ट्रपति विक्टर यानूकोविच ने रूस के दबाव मे आकर यूरोपियन संघ के साथ अपनी सदस्यता को त्याग दिया। जिससे युक्रेन में जन आक्रोश बढ़ा व आंदोलन शुरू हुए। इसका परिणाम ये हुआ कि विक्टर को राष्ट्रपति पद से हटा दिया गया व नए चुनावों से पेट्रो पोरोशेंको को युक्रेन का नया राष्ट्रपति चुना गया। पेट्रो पोरोशेंको ने सर्वप्रथम युरोपियन सघं की सदस्यता धारण की व NATO की सदस्यता को पूर्ण करने के लिए उसके दावों पर कार्य करना प्रारम्भ किया। ये रूस के लिए एक बहुत बड़ा झटका था। जो कि रूस के प्रभुत्व को अपने ही साथ रहे साम्यवादी देशों के पूजीवाँदी विश्व या पश्चिमी दुनिया के साथ हाथ बढाने देना नहीं चाहता था। युक्रेन के द्वारा इस कदम के उपरान्त रूस मे बदला युक्रेन के ही हिस्सा रहें स्वायत देश क्रीमिया पर कब्जा

करके लिया। रूस ने लाखो की संख्या में अपने सैनिक व हथियार भेजकर क्रीमिया को अपना हिस्सा बताया और पूर्ण तरीके से क्रीमिया के साथ अपनी भागीदारी को सुनिश्चित किया। इस प्रकार वर्ष 2014 मे क्रीमिया जो कि युक्रेन का ही हिस्सा था उस पर रूस ने अपना कब्जा कर लिया।

इस विवाद के बावजूद युक्रेन में अधिक जन आक्रोश बढ़ा। क्योकि युक्रेन के देशवासी सदैव ही युक्रेन को पूर्णतः स्वंतत्र राष्ट्र के रूप में देखना चाहते है। लेकिन रूस के द्वारा की गई इस प्रकार कि घटना के बाद युक्रेन अपनी अस्मिता को लेकर असमंजस की स्थिति में है क्रीमिया विवाद ने युक्रेन के देशवासियों के मन मे और अधिक स्वतंत्रता की भावना को जागृत किया है। जिससे आज यह मुद्दा विश्वभर मे उभर कर सामने आया है तथा इसने विश्व को दो गुटों में विभाजित कर दिया है।

रूस–युक्रेन विवाद का ज्वलत मुद्दा

रूस व युक्रेन विवाद का कारण जानने से पहले हमें यह जानना आवश्यक है कि यह स्थितियाँ आयी ही क्योंकि आज विश्व दो गुटों मे बंट गया। हम सभी जानते है कि पूर्व सोवियत यूनियन से अलग हुए भाग ही रूस व युक्रेन है तथा आज ये ही दो भाग एक दुसरे के दुश्मन बन चुके है। इस विवाद के शुरू होने का क्रम 2014 में प्रारम्भ हुआ था जब 2014 मे रूस ने क्रीमिया पर कब्जा कर लिया था। इस कब्जे के चलते युक्रेन ने पश्चिमी प्रभुत्व देशों व अमेरिका से रूस के खिलाफ कदम उठाने की मांग की थी। युक्रेन ने इस विवाद के चलते यूरोपीय सघं व नाटो से प्रतिबंध पैकेज तैयार करने व रूस के आक्रामक रवैये के खिलाफ सहयोग की गुजारिश की है आज यह मुद्दा इतना ज्वलंत है कि किसी राष्ट्र की अस्मिता को सकंट में घेरता नजर आ रहा है। आज विश्व भर में जहाँ राष्ट्रों की पहचान की रक्षा संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्था कर रही है। वहीं विश्व पटल पर अपने वर्चस्व को कायम करने वाले देश अपनी धौंस छोटे व कमजोर राष्ट्रों पर जमा रहे है।

रूस द्वारा युक्रेन पर NATO की सदस्यता ग्रहण ना करने का दबाव बनाया जा रहा है क्योंकि रुस की सामरिक स्थिति यह सुनिश्चित करती है कि यदि युक्रेन भी NATO से जुड़ गया तो रूस चारों ओर से अपने दुश्मन राष्ट्र जो कि सीधे रूप से अमेरिकी प्रभुत्व से कायम है। इसलिए रूस नहीं चाहता कि वह किसी भी प्रकार से पश्चिमी दुनिया के दबाव मे आए इसलिए वह युक्रेन के NATO मे सम्मिलित होने पर रोक लगा रहा है। वर्तमान मे रूस ने युक्रेन को करीब 1-50 लाख रूसी सैनिको से 3 तरफ से घेरे रखा है। पर अभी युक्रेन को नाटो सैनिको का समर्थन प्राप्त है। युकेन में 16 फरवरी 2022 को एकता दिवस के रूप में मनाया गया है इसे आम जनता ने शामिल होकर युकेन की रक्षा व रूस के इरादो का विरोध किया है।

यदि इस विवाद में हम अमेरिका की स्थिति की बात करे तो अमेरिका के राष्ट्रपति बाइडेन अपनी कूटनीति के जरिए यूकेन संकट में अमेरिका की भूमिका को मजबूत करने में जुटे है अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने जर्मनी में हुई नाटो की बैठक में कहा कि युक्रेन पर हमले की सूरत में अमेरिका रूस पर कड़े प्रतिबंध लगाएगा। उन्होनें यह भी दावा प्रस्तुत किया कि अमेरिका को नाटो सहित अन्य देशों की और से युक्रेन के मसले में समर्थन प्राप्त है। युक्रेन के द्वारा नाटो के संगठन की सदस्यता के कदम को रूस ने रैड लाइन कहकर बहिष्कार किया है और रूस अमेरिका के नेतृत्व वाले इस संगठन की युक्रेन तक इसकी पहुँच के परिणामो से चितिंत है। यूक्रेन व रूस से सटे हुए काला सागर से बुल्गरिया, जार्जिया, रोमानिया, तुर्की जुड़े है। ये सभी नाटो देश है नाटो देशों से चारों और से घिरे होने के कारण रूस युक्रेन को इस प्रभाव से दूर रखना चाहता है क्योंकि युक्रेन यदि NATO का सदस्य बना तो अमेरिका का एक पाँव युक्रेन में और दूसरे की पहुँच सीधे रूस से होगी जो रूस बिल्कुल नहीं चाहता है।

मिन्सक (Minsk) समझौते

Minsk I:- युक्रेन व रूसी समर्थित अलगाववादियों ने सितम्बर 2014 मे बेलारूस की राजधानी में 12 सूत्रीय युद्ध विराम समझौते पर सहमति व्यक्त की। इसके प्रावधानो मे कैदीयों का आदान प्रदान, भारी हथियारो की वापसी शामिल थी। परन्तु यह समझौता जल्दी ही टूट गया।

Minsk II:- वर्ष 2015 मे फ्रॉस व जर्मनी की मध्यस्थता मे मिन्सक II शांति समझौतो पर हस्ताक्षर हुआ, जिससे संघर्ष सीधे तौर पर खत्म हुआ। इस विद्रोही क्षेत्रों मे लड़ाई को समाप्त करने व सीमा को युक्रेन के राष्ट्रीय सैनिको को सौपने के लिए डिजाइन किया गया।

युक्रेन विवादः नाटो की भुमिका

नाटो यानी उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन। यह संगठन 1 अप्रेल 1949 को स्थापित हुआ। इस संगठन को सामुहिक सुरक्षा की व्यवस्था कहा जा सकता है। इसके तहत सदस्य राष्ट्र हमले की स्थिति मे आपसी सहयोग कर सकते है।

यदि हम रूस–युक्रेन विवाद में नाटो की भुमिका देखे तो अमेरिका युक्रेन को नाटो का सदस्य बनाना चाहता है मगर रूस ऐसा बिल्कुल नही चाहता है क्योंकि यदि ऐसा हुआ तो रूस की राजधानी मास्को नाटो अर्थात अमेरिका की नजर से युक्रेन के जरिए सिर्फ 640 कि.मी. की दूर रहेगी। अभी यह दूरी 1600 कि.मी की है। यदि हम द्वितीय विश्व युद्ध की बात करे जो सन् 1939 से 1945 तक चला था। उस समय युक्रेन ही वह क्षेत्र था जहाँ से रूस में अपनी सीमा की सुरक्षा की थी। अतः यदि रूस की दृष्टि से देखा जाए तो युक्रेन रूस की स्थिति के लिए एक महत्वपूर्ण भुमिका निभाता है और यदि यही युक्रेन NATO का सदस्य राष्ट्र बन जाता है तो विश्व भर में रूस का अस्तित्व को खत्म होने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।

युक्रेन मे रूसी सैनिको के बढ़ते जमावड़ो से अमेरिका ने नाटो सहयोगियों को मजबूत करने के लिए मिलिट्री स्ट्राइकर और सप्लाई ट्रको का दल पौलेंड तट भेज दिया है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है युक्रेन विवाद में अमेरिका सुपर पॉवर को प्रदर्शित कर रही है।

अमेरीकी प्रभुत्व के दुसरी तरफ यदि चीन की बात करे तो चीन ने युक्रेन में नाटों विस्तार को रोकने संबधी रूस की मांग का समर्थन किया है इस प्रकार चीन व रूस के साथ ने युक्रेन को अस्थिर किया है और यह धारणा बना दी है कि युक्रेन का भविष्य रूस के हाथ मे ही है। इससे रूस ने विश्व पटल पर तो अपना कद बढाया है मगर आर्थिक कठिनाइयों और सामरिक तौर पर देखे तो पुतिन को फायदे से अधिक नुकसान हुआ है तथा अमेरिका और पश्चिमी देशो के फौजी गठजोड़ नाटो को एक नया पुनर्जीवन मिला है।

वैश्वीकरण व युक्रेन विवाद

वैश्वीकरण के दौर मे साइबर दुनिया व सुव्यवस्थित परिवहन व्यवस्था ने आज पुरे विश्व को एक परिवार की तरह जोड़ दिया है आज विश्व के किसी भी कोने मे हुई घटना के सम्पूर्ण विश्व के लोगो से अछूती नहीं है। वैश्वीकरण के दौर से इंटरनेट के अविष्कार ने क्रांति लाई है। वैश्वीकरण ने राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सास्कृतिक सुवधा को और अधिक गहराई से जोड़ने में मदद की है वैश्वीकरण के कारण आज दोनों देशों के मध्य सीमाए नहीं रही है। आज पूरा विश्व एक वैश्विक गाँव बन गया है। इसी वजह से दुनिया में कही भी कुछ भी होता है उसका प्रभाव पूरे विश्व पर पड़ता है यही वजह है कि कल को यदि युक्रेन रूस विवाद मे रूस अपना पक्ष रखने में मजबूत रहा तो सम्पूर्ण विश्व मे तेल के दामो मे बढोतरी होगी।

ज्वलत मुद्दा यह है कि वैश्वीकरण के पर्दे मे उपनिवेशवाद को बढ़ावा मिल रहा है। विश्व में शांति बनाए रखने के नाम पर सैन्य संगठनों के द्वारा सैन्य सहायता उपलब्ध करवाई जा रही है रक्षा व सुरक्षा के नाम पर हथियारो का बाजार आज विश्व पटल पर बढ़ता जा रहा है असल तरीके से देखा जाए तो मानव अधिकारों व शांति वार्ताओं के नाम पर विवादों का अंतर्राष्ट्रीयकरण किया जा रहा है। इन राबके कारण आज वैश्वीकरण के परिणामों मे असमानता गरीबी व भुखमरी को भी बढ़ावा मिला है युक्रेन रूस विवाद में रूस के खिलाफ अमेरिका के साथ आज पश्चिमी देशों का पूरा गुट जुड़ गया है। रूस अमेरिकी तनाव को हम उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद की लडाई भी कहा जा सकता है।

युक्रेन–रूस विवाद से पूरे विश्व को भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है यहाँ तक कि रूस का 27 प्रतिशत निर्यात यूरोपियन यूनियन के देशों को होता है अतः हम कह सकते है यूरोपीय देश गैस पर काफी हद तक रूस पर निर्भर है। यदि NATO देशों द्वारा रूस पर प्रतिबंध लगाया जाता है तो इन यूरोपीय देशो पर भारी संकट की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। यहाँ तक की जन आक्रोश के चलते देशवासीयों द्वारा तखतापलट होना सामान्य बात है। जर्मनी ने भी एक पक्ष मे ये कहा है कि युक्रेन पर हमले की स्थिति में रूस से गैस सप्लाई के लिए नोर्ड स्ट्रीम–2 पाइपलाइन प्रोजेक्ट खत्म हो जाएगा। वही ब्रिटेन–फ्रांस भी रूस के खिलाफ है मगर ये कहा जाना मुश्किल है कि ये साथ कब तक बना रहेगा। क्योंकि इन देशों को रूस द्वारा एक तिहाई गैस सप्लाई किया जाता है और रूस पर प्रतिबंध लग जाने से इन देशो मे आर्थिक सकट पैदा हो सकता है। युक्रेन विवाद से सम्पूर्ण विश्व मे तेल के दाम चढ़े है। इसका सबसे बड़ा फायदा सऊदी अरब को हुआ है इस संकट मे वह खुद को फिर से स्थापित करने का मौका देख रहा है।

युक्रेन विवाद पर भारत की स्थिति

युक्रेन गतिरोध से भारत भी अछूता नहीं रहा है। क्योंकि भारत 60 प्रतिशत हथियारों का आयात रूस से करता है वही आर्थिक तौर पर तेल का 85 प्रतिशत आयात भारत को दुसरे देशों से ही करना पड़ता है। विश्व मे तेल संकट के उभरने से भारत मे भी कच्चे तेल कि कीमतों से अर्थव्यवस्था व जनजीवन पर अत्याधिक असर पड़ेगा। वही दूसरी तरफ देखा जाए तो भारत युक्रेन–रूस विवाद पर निष्पक्ष बना रहा है। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि भारत सदैव गुट–निरपेक्षता की नीति का अनुसरण करता आया है जिससे की वह किसी भी राष्ट्र के समर्थन व विरोध में नहीं है।

वही भारत का इस विवाद मे निष्पक्ष रखने का दूसरा पक्ष यह भी है कि भारत–चीन विवाद के समय भी रूस द्वारा निष्पक्षता का भाव प्रदर्शित किया गया था। जबकि चीन एक साम्यवादी देश है तथा रूस के समान ही साम्यवाद से प्रभावित है तथा वही रूस व भारत भी मित्रता से बंधे हुए है।

निष्कर्ष

आज विश्व अनेक परेशानियों से जुझा रहा है किसी तरफ गरीबी भुखमरी की मार है तो कहीं जल सकंट । मगर इन सभी परेशानियों के बावजूद किसी देश की अस्मिता का सकंट पूरे विश्व भर के देशों का संकट है। आज पुरे विश्व में लोकतांत्रिक पद्धति को सर्वश्रेष्ठ चुना गया है, सभी राष्ट्रों का अधिकार है कि वह सम्प्रभु राष्ट्र की तरह व्यवहार करे व नागरिको का स्वतत्रता प्रदान करें। लेकिन यदि हम युक्रेन–रूस विवाद की तरफ नजर डालते है तो यही संकट की स्थिति सामने आती है कि आज संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्थाओं के होते हुए युक्रेन की सम्प्रभुता खतरे में है। युक्रेन विवाद को ध्यान में रखते हुए ये कहा जा सकता है कि किसी भी राष्ट्र की सम्प्रभुता व लोकतंत्र की रक्षा के लिए सम्पूर्ण विश्व समुदाय को आगे आना चाहिए। युक्रेन व रूस विवाद को खत्म करने के लिए युक्रेन व रूस को अपने सम्बन्धो की पुनः व्याख्या करनी चाहिए। तथा साथ ही युक्रेन को अपनी अस्मिता को बचाए रखने के लिए एक स्वतंत्र राष्ट्र की तरह व्यवहार करना चाहिए। क्योंकि युक्रेन जियो–पोलिटिक्स के संदर्भ मे यूरोप मे अपनी एक महत्वपुर्ण भूमिका अदा करता है और यदि युक्रेन NATO की सदस्यता ग्रहण करता है तो यह अति संम्भव संभावना है कि रूस सीमा सुरक्षा विवाद सदैव बना रहेगा। और अमेरिका व NATO समुदाय के लिए युक्रेन एक बफर स्टेट बन कर ही रह जाएगा। हम सभी जानते है कि युक्रेन अकेले रूस का सामना नहीं कर सकता है लेकिन NATO का साथ होना भी विवाद को ओर भड़काएगा ही। अतः आवश्यक है कि युक्रेन अपनी स्वंतत्रता को बनाए रखें तथा रूस व NATO दोनो के साथ ही मधुर सम्बन्ध बनाए रखे तथा विश्व पटल पर अपनी निरपेक्ष स्थिति को मजबूत करें।

भारत भी हमेशा से ही गुट निरपेक्ष नीति का अनुसरण करता रहा है। अतः भारत को युक्रेन–रूस विवाद मे मध्यस्थता करते हुए महत्वपुर्ण भूमिका निभानी चाहिए। क्योंकि NATO के साथ सम्मिलित होने पर ज्यादा समय तक युक्रेन सीमा पर शांति बनाए रखना असम्भव है क्योंकि रूस व पश्चिमी देश इस सीमा को अपने शक्ति प्रदर्शन करने के लिए उपयोग

करेंगे जो युक्रेन के लिए एक भयानक स्थिति हो सकती है। अतः नष्कर्ष मे यह कहा जाना आवश्यक है कि विश्व पटल पर दो सुपर पॉवर की जंग में यक्रेन को अपना बचाव स्वंय ही किया जाना चाहिए। क्योकि यूरोप राजनीति मे सामरिक व आर्थिक तरीके से युक्रेन अपना एक मजबूत पक्ष रखता है।

संदर्भ

1. शेवतसोवा एल (2020) रशियस यूक्रेन ऑब्सेशन, जर्नल ऑफ डेमोक्रेसी, 31(1) 138–147,
2. बिलेफस्की, डैन पेरेज पेना रिचर्ड, (डंतबी 11, 2022) रूट्स ऑफ दी यूक्रेन वॉर हाऊ दी क्राइसिस डेवलपेड, दी एनवाय टाइम्स,
3. येकेलचिक, सेरही (2020) , यूक्रेन, व्हाट एवरीवन नीड्स टू नो.न्यूयॉर्क, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,
4. डीएनीयरी, पी (2019) यूक्रेन एंड रशिया, फ्रॉम सिविाइज्ड डाइवोर्स टू अनसिविल वॉर कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस,
5. जेमर वेर, डेनियल मेरिनो, (1 मार्च 2022) द हिस्ट्री एंड इवोल्यूशन ऑफ यूक्रेनियन नेशनल आइडेंटिटी. द कन्वर्सेशनए